घूमने फिरने के शौकीन होते हैं L अक्षर वाले

जिन लोगों का नाम अंग्रेजी के एल अक्षर से शुरू होता है, वे अधिकतर भावुक तथा दार्शनिक प्रवृति के होते हैं।

- ये सोचने-विचारने वाले होते हैं।
- इन लोगों का प्रत्येक कदम साहस से भरा, परंतु नपा-तुला होता है।
- अपने कार्यों में श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं।
- ये स्थिर प्रकृति के होते हैं, अपने हाल में मस्त, अपनी धुन के पक्के और अपने काम में लगे रहने वाले लोग हैं ये।
- आपको न तो पीछे घूमकर देखने की फिक्र होती है, न आदत।
- साधाराण पद या काम आपको पसंद नहीं, आपको उच्च पद और गरिमापूर्ण कार्य पसंद हैं। योजनाबद्ध रूप से काम करने के कारण आपको उच्च पद की प्राप्ति होती है।
- आपको सोसाइटी से बहुत प्यार तथा सम्मान प्राप्त होता है।
- मुश्किल के समय में आपकी अंतरात्मा की आवाज़ आपकी मदद करती है।
- लोगों के दिल की बात जानने में भी यह आवाज आपकी मदद करती है।

शयन कक्ष में दर्पण

आई ना जिसमें हम चेहरा देखते हैं, उसमें से एक प्रकार की ऊर्जा बाहर निकलती है। आपके घर में जिस दिशा में आईना लगा हुआ होता है, उसी के अनुसार सकारात्मक या नकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

शयनकक्ष में दर्पण लगाना वर्जित है। पलंग के सामने आईना नहीं लगाएं, क्योंकि इससे पति-पत्नी के संबंधों में तनाव हो सकता हैं या पत्नी के स्वास्थ्य में भी गिरावट आ सकती है। आईना के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए उन्हें ढक कर या अलमारी के अंदर की ओर लगाएं। पलंग पर सो रहे पति-पत्नी को प्रतिबिंबित करता हुआ आईना अशुभता का कारण बन सकता है।

फेंगशुई प्रोडक्ट

ओम मणि हैंगिंग

यह बेलनाकार हैंगिंग लाल जैस्पर क्रिस्टल से बनी है। इसके ऊपर ओम मणि पद्म हम मंत्र गुदा हुआ है। इसे आसानी से लटकाने और सुंदर दिखाने के लिए हैंगिंग का आकार दिया गया है। ओम मणि पद्म हम बौद्ध धर्म का सबसे ज्यादा प्रभावी मंत्र कहा जाता है। दलाई लामा को अवलोकितेश्वरा का दूसरा अवतार माना जाता है, इसलिए उनके अनुयायी इसे सबसे ज्यादा ग्रहण करते हैं। इसे लिखकर या पत्थर पर उकेरकर प्रेयर व्हील्स के साथ लगा दिया जाता है, जिससे यह कहीं ज्यादा असरदार साबित हो। यह मंत्र कहना जितना आसान है, उतना ही यह प्रभावी भी है, क्योंकि इसमें बौद्ध धर्म की पूरी शिक्षा का निचोड़ है। इसका उच्चारण ओम, म, णि, पा, मे, हम कहते हुए व्यक्ति पूरी प्रवीणता से ध्यान केंद्रित करता है। जब बात लाल रंग के जैस्पर की हो, तो यह बेहद ही शक्तिशाली क्रिस्टल है जो दिमाग और नर्व्स को ठंडा व सुकून में रखता है। इससे तनाव कम होता है और शांति आती है। अगर जरूरत हो तो यह आराम मिलने और घाव भरने की शक्ति को भी बेहतर बनाता है। यह क्रियाएं बढ़ाने, जल्द सोच पाने, आध्यात्मिक दृढ़ता, सोचने की शक्ति बढ़ाने और हिम्मत बढ़ाने के काम भी आता है। इसके दूसरे फायदे यह हैं कि इससे लोग दूसरों की मदद करने, ईमानदारी बरतने व शरीर को ऊर्जा देने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

प्रत्येक देवता को एक विशेष खाद्य वस्तु पसंद है। यदि उन्हें उनकी प्रिय वस्तु अर्पित की जाए, तो वे शीघ्र इच्छा की पूर्ति करते हैं। किस देवता को कौन-सी वस्तु और किस तरह अर्पित की जाए, पढ़ें...

किस देवता को क्या पसंद?

आदि काल से ही मनुष्य अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए तथा अपने उत्थान के लिए देवी-देवताओं की पूजा- अर्चना करता आया है। पूजा की सामग्री के साथसाथ महत्व है ऐसी खाद्य सामग्री का, जो किसी देवी-देवता की मनपसंद भोज्य सामग्री हो। शास्त्रों का कथन है कि देवी-देवताओं को उनकी मनपसंद खाद्य सामग्री अर्पित की जाए, तो वह प्रसन्न होकर शीघ्र ही साधक और भक्त की इच्छाओं की पूर्ति करते हैं।

जिस भक्त की जैसी इच्छा होती है, उसके मुताबिक भी देवता को सामग्री अर्पण की जाती है। शास्त्रों का यह भी कथन है कि किसी भी देवता को उससे संबंधित ग्रह के अनुरूप ही खाद्य सामग्री भेंट की जानी चाहिए। इससे विपरीत या उस देवता के शत्रु ग्रह से संबंधित सामग्री अर्पित करना ठीक नहीं माना जाता। विधिपूर्वक सामग्री अर्पित करने से सभी कार्यों की सिद्धि शीघ्र होती है। ये सामग्री भौतिक रूप से भी अर्पित की जाती है और मनस रूप से भी। शास्त्रों में हर देवी और देवताओं की प्रिय खाद्य सामग्री का विस्तार से वर्णन मिलता है। ये सामग्री किस विधि से उन्हें अर्पित की जानी चाहिए, इसका वर्णन भी मिलता है। ऐसी ही कुछ खाद्य सामग्रियां इन देवताओं की पसंद हैं-

श्री गणेश जी

इन्हें हरा रंग पसंद है। दूर्गा चढ़ाकर हाथ जोड़कर आप यदि मोढक का (यानी लड्डू) का भोग बुधवार के दिन इन्हें अर्पित करें, तो आपकी मनोकामनाओं की पूर्ति के सभी द्वार गणेश जी स्वयं खोलते हैं।

लक्ष्मी मां

अर्थ की पूर्ति, धन संपदा की प्राप्ति के लिए पूज्य मां लक्ष्मी जी की अराधना सर्वफलदायी है। इनके लिए संध्या का समय निहित किया गया है। अत: संध्या के समय कोई भी सफेद मिष्ठान इन्हें अति पसंद हैं- खीर व मिश्री को अर्पित कर आप लक्ष्मी मां को अति-शीघ्र प्रसन्न कर सकते हैं। सफेद बताशे भी इनका प्रिय भोजन है।

श्रीकृष्ण जी

हमारे ग्रंथों में श्रीकृष्ण जी को संपूर्ण कला युक्त बताया गया है। यशोदा मां द्वारा खिलाया मक्खन तथा मिश्री का योग आज भी वृंदावन में बड़े चाव के साथ ठाकुर जी को अर्पित किया जाता है। साथ ही ठाकुर जी को 56 भोग की भी परंपरा है। इसमें तुलसी दल को प्रधानता दी गई है। तुलसी दल की अनुपस्थिती में 56 भोग भी कृष्ण जी स्वीकार नहीं करते।

श्रीहनुमान जी

गुड़ तथा चने के प्रेमी माने जाते हैं। गुड़ तथा रोटी के आटे का चूरमा इन्हें विशेष रूप से पसंद है। मंगलवार को ऐसे प्रसाद की विशेष व्यवस्था की जाती है। वैसे लड्डू भी (बूंदी के) इन्हें चढ़ाए जाते हैं।

विष्णु जी

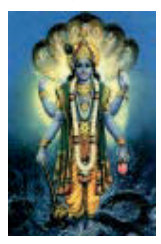

इनके पसंदीदा खाद्य पदार्थों में पीले रंग के खाद्य पदार्थों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कड़ी-चावल तथा केला इन्हें विशेष प्रिय है। केला खिलाकर तथा कड़ी (बिना प्याज के) का इन्हें भोग लगाकर आप लक्ष्मी पति को अपने वश में कर सकते हैं और जहां विष्णु जी प्रसन्न हों वहां लक्ष्मी मां भी प्रसन्न रहती हैं।

दुर्गा मां

मां दुर्गा शक्ति की एक मिसाल हैं। मां के रूप में इनकी वंदना तथा पूजा सर्वशक्तिमय मां से शक्ति की प्राप्ति का एक सरल उपाय है। मां को नारियल, मेवे तथा मखानों का विशेष भोग लगाया जाता है। सूखे छुआरे भी मां को पसंद हैं। अपनी कंजकों के लिए मां हल्वा-पूरी, तथा चने के भोजन की अपेक्षा करती हैं।

श्रीराम जी

श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम माने जाते हैं। मर्यादा में रहकर राम राज्य की कल्पना ही मन को आनंदित करती है। रामजी को आप कुछ भी खाद्य पदार्थ बड़े प्रेम से खिलाएं, तो वह उसे स्वीकार करते हैं। रामायण में आया भी है कि शबरी के जूठे बेर भी रामजी ने प्रेम-पूर्वक स्वीकार किए हैं तथा उनकी सारी मनोकामनाएं पूर्ण की हैं।

शिव जी

इनकी पूजा-अर्चना को सबसे सरल बताया गया है। यह थोड़े में ही ख़ुश होने की प्रवृति रखते हैं। भोग-धतूरा बेल-पत्र इन्हें प्रिय है। दूध का भोग, जिसमें कुछ मीठा हो यानि ख़ीर और खांड का भोग इन्हें विशेष पसंद है। सभी खाद्य-पदार्थ इस सृष्टि में स्वयं उसी सर्वशक्तिमान की ही देन है। मनुष्य द्वारा निर्मित कुछ भी नहीं है। फिर भी षोडोपचार पूजा विधि में उन्हीं के द्वारा बनाई गई चीज़ें, उन्हीं (भगवान को) को पुन: सप्रेम अर्पित करने का विशेष महत्व है। भौतिक युग में समय की कमी के कारण यह सभी पदार्थ आप मानसिक रूप से भी अपने इष्ट देवी-देवताओं अर्पित करके, संपूर्ण मनोकामनाओं की पूर्ति की याचना कर सकते हैं।

अशुभ नहीं है तीन

अपने रोज़मर्रा के कामों में लोग अंक तीन को अशुभ मानते हैं। परंतु गहराई से विवेचन किया जाए, तो अपने गुणों के कारण अंक तीन कई शुभफल प्रदान करने वाला भी साबित होता है...

भारतीय दर्शन एवं आध्यात्म तथा सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुसार अंक भी शुभ और अशुभ माने जाते हैं। सामान्यतया सम अंक शुभ और और विषम अंक अशुभ माने जाते हैं। जहां तक अशुभ अंको का प्रश्न है, तो सबसे ज्यादा अशुभ अंक माना जाता है 'तीन'। इसीलिए किसी भी शुभ कार्य में 'तीन' से बचा जाता है। उदाहरण के तौर पर शुभ कार्य करने के लिए जाते समय एक साथ तीन लोग नहीं जाते। भोजन खिलाते समय एक साथ तीन रोटियां, पूरियां थाली में रखना अशुभ माना जाता है आदि।

वैसे तो तेरह का अंक भी अशुभ स्वीकारा जाता है। पर तीन के अंक की अशुभता तो सर्वस्वीकार्य है। इसीलिए सभी तीन से बचने की कोशिश करते हैं। कहने का आशय यह है कि तीन के अंक को व्यापकता और सुनिश्चितता के साथ अशुभ, अमंगलकारी और अहितकारी माना जाता है। परंतु यथार्थ यह है कि तीन का अंक हर्गिज़ अशुभ नहीं है। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए क्योंकि तीन के अंक को अशुभ न मानने एव हानिकारक न स्वीकारने के मूल में अनेक कारण एवं तर्क विद्यमान हैं।

पहला तर्क यह है कि इसे संपूर्ण सृष्टि के संचालक ब्रह्मा, विष्णु और महेश अर्थात् तीन देव ही हैं। इस प्रकार संपूर्ण संसार का संचालन जब तीन शक्तियों के हाथ में है, तब ऐसी स्थिति में तीन का अंक अशुभ कैसे हो सकता है? इसी प्रकार लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा, ये तीन देवी शक्तियां ही क्रमश: धन, विद्या व शारीरिक बल की स्वामिनी हैं। इन्हीं तीन देवियों से सामथ्यों की रचना हुई है। अत: जब तीन देवियों का इतना महत्व है, तो फिर तीन का अंक अशुभ एवं अमंगल का सूचक कैसे हो गया?

इसी प्रकार शिव त्रिनेत्रधारी हैं। उनका त्रिशूल भी तीन लोक वाला होता है। ॐ शब्द भी तीन अक्षरों के मेल से बना है। राम, लक्ष्मण सीता भी तीन ही थे, जबकि उनका वनगमन धर्म, सत्य, न्याय, मर्यादा, मानवता सभी के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुआ था। ग्रहों की कुल संख्या नौ होती है। नक्षत्रों की संख्या 27 अर्थात् नौ गुणा तीन होती है। मौसम भी तीन होते हैं सर्दी, गर्मी, वर्षा और इन सबकी क्या और कितनी महत्ता है, यह किसी से छिपा नहीं है। ब्रह्मांड के तीन प्रमुख अवयवों सूर्य, चंद्रमा और तारे भी तीन वर्गों में पार्थिव देवता, अंतरिक्ष के देवता एवं आकाश के देवता में विभाजित किया जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि तीन का अंक किसी भी प्रकार से अशुभ एवं अमंगल का सूचक नहीं है, बल्कि यह अधिकांश अंकों में शुभ एवं मंगल का सूचक प्रतीत होता है।

कैसे निकाले स्थानीय समय

जन्म कुंडली बनाने के लिए जन्मतिथि, समय एवं स्थान की आवश्यकता होती है। हमें जो समय ज्ञात है वह स्टैंडर्ड टाइम है जबकि हमें उस निश्चित स्थान के (जहां जन्म हुआ है) स्थानीय समय की आवश्यकता रहती है। ऐसी स्थिति में पहले हमें समय का परिवर्तन (शुद्ध) करना होगा। इसके लिए वेलांतर संस्कार एवं देशांतर संस्कार करने की आवश्यकता होती है। वेलांतर संस्कार हेतु वेलांतर सारिणी पंचांग तथा ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों में उपलब्ध हैं। उसमें निश्चित अंग्रेजी माह की तारीख एवं माह को देखकर निर्धारित मिनट-सेकंड स्टैंडर्ड टाइम में से कम या जोड़ देंगे (जैसा कि सारिणी में + या - हो)। वेलांतर संस्कार करने के पश्चात देशांतर संस्कार करना होता है। भारतीय मानक समय (स्टैंडर्ड टाइम) 82.30 डिग्री रेखांश/देशांश/तुलांश का है। इसी आधार पर पूरे देश की घड़ियां चलती है। जबकि प्रत्येक शहर का स्थानीय समय भिन्न होता है। ज्योतिषी को चाहिए कि वे जिस शहर में बालक जन्मा है उस शहर या उसके नजदीकी शहर का देशांतर ज्ञात कर लें। प्राप्त देशांतर का स्टैंडर्ड देशांतर 82.30 डिग्री से अंतर निकाल लें। प्राप्त अंतर को 4 से गुणा

कर लें। प्राप्त फल को अभीष्ट समय से घटाएं/जोड़ें (यदि नियत स्थान का देशांतर 82.30 डिग्री से अधिक है तो जोड़ें, किंतु 82.30 डिग्री से कम है तो घटाएं) उदाहरण के रूप में दिनांक 1 जनवरी 2009 को प्रात: 9.40 पर बालक का जन्म उज्जैन में हुआ। वेलांतर सारिणी के अनुसार 1 जनवरी का वेलांतर -4 मिनट है। अत: वेलांतर संस्कार करने से जन्म 9.36 (9.40 - 0.4 = 9.36) हुआ। उज्जैन का देशांतर 75.50 है। इसे भारतवर्ष के स्टैंडर्ड मापक देशांतर 82.30 से कम किया (82.30 - 75.50 = 6.40) तो - 6.40 अंतर आया इसे 4 से गुणा करने पर 26 मिनट एवं 40 सेकंड आया। इसे 9.36 में से कम किया गया क्योंकि उज्जैन का देशांतर भारतवर्ष के देशांतर 82.30 से कम है। 9.36 - में से 26 मिनट 40 सेकंड कम करने से स्थानीय समय 9 बजकर 09 मिनट एवं 20 सेकंड आया। यही बालक (जातक) का शुद्ध स्थानीय समय है।

जन्म पत्रिका में शिक्षा के योग

आज जीवन के हर मोड़ पर आम आदमी स्वयं को खोया हुआ महसूस करता है। विशेष रूप से वह विद्यार्थी जिसने दसवीं या बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की है, उसके सामने सबसे बड़ा संकट यह रहता है कि वह कौन से विषय का चयन करे जो उसके लिए लाभदायक हो। एक अनुभवी ज्योतिषी आपकी अच्छी मदद कर सकता है। जन्मपत्रिका में पंचम भाव से शिक्षा तथा नवम भाव से उच्च शिक्षा तथा भाग्य के बारे में विचार किया जाता है। सबसे पहले जातक की कुंडली में पंचम भाव तथा उसका स्वामी कौन है तथा पंचम भाव पर किन किन ग्रहों की दृष्टि है, ये ग्रह शुभ-अशुभ है अथवा मित्र-शत्रु, अधिमित्र हैं विचार करना चाहिए। दूसरी बात नवम भाव एवं उसका स्वामी, नवम भाव स्थित ग्रह, नवम भाव पर ग्रह दृष्टि आदि शुभाशुभ का जानना। तीसरी बात जातक का सुदर्शन चंद्र स्थित श्रेष्ठ लग्न के दशम भाव का स्वामी नवांश कुंडली में किस राशि में किन परिस्थितियों में स्थित है ज्ञात करना, तीसरी स्थिति से जातक की आय एवं आय के स्त्रोत का ज्ञान होगा।

जन्मकुंडली में जो सर्वाधिक प्रभावी ग्रह होता है सामान्यत: व्यक्ति उसी ग्रह से संबंधित कार्य-व्यवसाय करता है। यदि हमें कार्य व्यवसाय के बारे में जानकारी मिल जाती है तो शिक्षा भी उसी से संबंधित होगी। जैसे यदि जन्म कुंडली में गुरु सर्वाधिक प्रभावी है तो जातक को चिकित्सा, लेखन, शिक्षा, खाद्य पदार्थ के द्वारा आय होगी। यदि जातक को चिकित्सक योग है तो जातक जीव विज्ञान

जन्मकुंडली में जो सर्वाधिक प्रभावी ग्रह होता है सामान्यतः व्यक्ति उसी ग्रह से संबंधित कार्य-व्यवसाय करता है।

विषय लेकर चिकित्सक बनेगा। यदि पत्रिका में गुरु कमजोर है तो जातक आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, रैकी या इनके समकक्ष ज्ञान प्राप्त करेगा। श्रेष्ठ गुरु होने पर एमबीबीएस की पढ़ाई करेगा। यदि गुरु के साथ मंगल का श्रेष्ठ योग बन रहा है तो शल्य चिकित्सक, यदि सूर्य से योग बन रहा है तो नेत्र चिकित्सा या सोनोग्राफी या इलेक्ट्रॉनिक उपकरण से संबंधित विषय की शिक्षा, यदि शुक्र है तो महिला रोग विशेषज्ञ, बुध है तो मनोरोग तथा राहु है तो हड्डी रोग विशेषज्ञ बनेगा।

चंद्र की श्रेष्ठ स्थिति में किसी विषय पर गहन अध्ययन करेगा। लेखक, कवि, श्रेष्ठ विचारक बनेगा तथा बीए, एमए कर श्रेष्ठ चिंतनशील, योजनाकार होगा। सूर्य के प्रबल होने पर इलेक्ट्रॉनिक से संबंधित शिक्षा ग्रहण करेगा। यदि मंगल अनुकूल है तो ऐसा जातक कला, भूमि, भवन, निर्माण, खदान, केमिकल आदि से संबंधित विषय शिक्षा ग्रहण करेगा। बुध प्रधान कुंडली वाले जातक बैंक, बीमा, कमीशन, वित्तीय संस्थान, वाणी से संबंधित कार्य, ज्योतिष-वैद्य, शिक्षक, वकील, सलाहकार, चार्टड अकाउंटेंट, इंजीनियर, लेखपाल आदि का कार्य करते हैं। अत: ऐसे जातक को साइंस, मैथ्स की शिक्षा ग्रहण करना चाहिए किंतु यदि बुध कमजोर हो तो वाणिज्य विषय लेना चाहिए। बुध की श्रेष्ठ स्थिति में चार्टड अकाउंटेंट की शिक्षा ग्रहण करना चाहिए। शुक्र की अनुकूलता से जातक साइंस की शिक्षा ग्रहण करेगा। शुक्र की अधिक अनुकूलता होने से जातक फैशन, सुगंधित व्यवसाय, श्रेष्ठ कलाकार तथा रत्नों से संबंधित विषय को चुनता है। शनि ग्रह प्रबंध, लौह तत्व, तेल, मशीनरी आदि विषय का कारक है। अत: ऐसे जातकों की शिक्षा में व्यवधान के साथ पूर्ण होती है। शनि के साथ बुध होने पर जातक एमबीए फाइनेंस में करेगा। यदि शनि के साथ मंगल भी कारक है तो सेना-पुलिस अथवा शौर्य से संबंधित विभाग में अधिकारी बनेगा। राहु की प्रधानता कुटिल ज्ञान को दर्शाती है। केतु-तेजी मंदी तथा अचानक आय देने वाले कार्य शेयर, तेजी मंदी के बाजार, सट्टा, प्रतियोगी क्वीज, लॉटरी आदि।

कभी-कभी एक ही ग्रह विभिन्न विषयों के सूचक होते हैं तो ऐसी स्थिति में जातक एवं ज्योतिषी दोनों ही अनिर्णय की स्थिति में आ जाते हैं। उसका सही अनुमान लगाना ज्योतिषी का कार्य है। ऐसी स्थिति में देश, काल एवं पात्र को देखकर निर्णय लेना उचित रहेगा। जैसे नवांश में बुध का स्वराशि होना ज्योतिष, वैद्य, वकील, सलाहकार का सूचक है। अब यहां जातक के पिता का व्यवसाय (स्वयं की रुचि) जिस विषय की होगी, वह उसी विषय का अध्ययन कर धनार्जन करेगा।

शत्रु-मित्र-अंक

किसी भी महीने की 1, 10, 19 व 28 तारीख को जन्म लेने वालों का मूलांक एक होता है। इस मूलांक वालों का स्वामी ग्रह सूर्य है। मूलांक एक वाले व्यक्तियों की मित्रता 2 एवं 7 अंक वालों से अधिक होती है क्योंकि यह मित्र अतिमित्र अंक हैं। 5, 3, 9 एवं 4 अंक वाले इनके साथ समभाव रखते हैं। मूलांक एक वालों की मित्रता 6 एवं 8 अंक वालों से नहीं हो पाती, क्योंकि इनके लिए यह शत्रु एवं अतिशत्रु अंक हैं।